IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 5, June 2023

सुषमा मुनीन्द्र जी के कथा–साहित्य में भाषा एवं शिल्प

श्वेता पाण्डेय
शोधार्थी, शास. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)
डॉ. अमित शुक्ला
प्राध्यापक (हिन्दी), शास. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

शोध सारांशः सुषमा जी का भाषा पर सम्पूर्ण अधिकार है। आपने अपनी शैली को सहज सरल बनाने के लिए वातावरण एवं पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है। आपकी रचनाओं में हमें प्रौढ़ता का आभास होता है। आपने अंलकारों का भी बखूबी चित्रण किया है। आपकी कहानियों एवं उपन्यास की भाषा जन भाषा होने के कारण पाठकों को भाव–विभोर एवं अभिभूत कर देती है। साधारण लगने वाले विषय भी आपकी भाषा एवं शैली से विचारणीय लगते हैं।

मुख्य शब्दः सुषमा, मुनीन्द्र, कथा–साहित्य, भाषा, शिल्प आदि।

प्रस्तावनाः

भाषा की अगर बात करें तो सबसे पहले यही सवाल उठता है कि भाषा किसे कहते है? भाषा के बारे में हम कह सकते हैं कि जिसके द्वारा हम अपने भावों को लिखित अथवा कथित रूप से दूसरों को समझा सके और उसे भाषा कहते हैं। सार्थक शब्दों के समूह या संकेत को भाषा कहते हैं। भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर व पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों का आदान–प्रदान करता है।

भाषा शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बना है जिसका अर्थ है बोलना या कहना। भाषा के बारे में कई विद्वानों ने अपनी–अपनी परिभाषाएँ दी हैं–

डॉ. भोलानाथ तिवारी– ''भाषा उसे कहते हैं जो बोली और सुनी जाती है और बोलना भी पशु–पक्षियों का नहीं अपितु मनुष्यों का।''

'अमरकोष' के अनुसार– ''ब्रह्मा तु भारती भाषा गीर वाक् वाणी सरस्वती।''

'मैक्समूलर' के अनुसार– ''भाषा और कुछ नहीं है, केवल मानव की चतुर बुद्धि द्वारा अविष्कृत ऐसा उपाय है जिसकी मदद दूसरों पर प्रकट कर सकते हैं।''

'पाणिनी' के अनुसार– ''व्यक्ता वाचि वर्णा येषां तऽमें व्यक्त वाचः'' अर्थात् वर्णों के द्वारा जो सार्थक वाणी व्यक्त होती है, वह भाषा कहलाती है। किन्तु यह परिभाषा अपने आप में पूर्ण नजर नहीं आती, क्योंकि भाषा का कार्य केवल वाणी के द्वारा ही नहीं बल्कि अन्य माध्यमों द्वारा भी किया जाता है।''

'कामताप्रसाद' के शब्दों में– ''भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली–भाँति प्रकट कर सकता है तथा दूसरों के विचार स्वयं सम्यक् रूप से समझ सकता है।''

'प्लेटो' का दृष्टिकोण– ''विचार आत्मा की मूक बातचीत है, पर वही जब ध्वनि के माध्यम से होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।''

'डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना'– ''भाषा मुख से उच्चरित उस परम्परागत सार्थक एवं व्यक्त ध्वनि संकेतों की व्यक्ति को कहते हैं, जिसकी सहायता से मानव आपस में विचार एवं भावों को आदान–प्रदान करते हैं तथा जिसको वें स्वेच्छानुसार अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं।''

डॉ. श्यामसुन्दर दास– ''मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान–प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि–संकेतों का जो व्यवहार होता है उसे भाषा कहते हैं।''

अतः हम कह सकते हैं कि भाषा इंसान के भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। भाषा मानव सभ्यता को भी दर्शाता है। मनुष्य अपनी भाषा द्वारा ही अपनी प्रतिष्ठा व्यवहार स्थापित करता है। साहित्यकार भी अपनी रचना को भाषा के बिना प्रस्तुत नहीं कर सकता। रचना के लिए भाषा का बहुत बड़ा योगदान रहता है। भाषा अच्छी है तो पाठक पढ़ने में सहज अनुभव करता है। सुषमा मुनीन्द्र जी ने अपने कथा–साहित्य में बहुत ही सरल भाषा का प्रयोग किया है। सुषमा जी ने अपने कथा साहित्य में विविध प्रकार की भाषाओं का प्रयोग किया है जैसे कि– पूर्वी भाषा– सुषमा जी की कहानियों में पूर्वी भाषा की झलक देखी जा सकती है–

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 5, June 2023

- 'चिमटी तोरे पुलहा का सब्र नहीं आय। जा काह का खबर न होई। हमहूँ छिप के तोहरे भाई से मिले रहेन'
- 'कइसे न रोकोगे? हम चोरहटा में उतरेगें। सेत में नहीं बैठे है। किराया दिये हैं।

बघेली भाषा:– आपने अपने कथा–साहित्य में बघेली भाषा का भी प्रयोग किया है–

ये बड़की ग्यारह की पूज रही है। इसका काज बियाह हेरो–ढूँढ़ो। दिनभर घर में घोड़ जैसी मेछराती है अबहिन मझली से खूब लड़िन ह्या।

जसोदा बज्र बदमास ही। अबे भर बबुली का हमरे नेरे (पास) छोड़े रही अउर अपना (खुद) भतार के साथ मजा भारत रही। ऊब बबतिया कमाय, लाग व कहत ही हमार बिटिया लउटाव।

बनारस और इलाहाबाद जो भाषा बोली जाती है, जैसे कि अवधी एवं भोजपुरी मिश्रित बोली। सुषमा जी कहानियों में इस बोली का भी प्रयोग देख सकते हैं–

- गया तो गया। इतनी ऐंठ अकड़ तो हमसे न सही जायेगी। संकट अकाल में मदद करते रहे। अधिया में खेत दिये। कितना न खिलात रहे, सारे ने नमक का लिहाज न किया।
- आजकल लोग जो हिन्दी और अंग्रेजी को मिलाकर बोलते हैं। जिसे हिंग्लिस भाषा कह सकते हैं। जल्दी कोई रचनाकार इस भाषा का प्रयोग नहीं करता पर सुषमा जी ने इसका प्रयोग करके नवीन उदाहरण रखा है–
- इट्स माय फरमान।
- फॉरगेट योर ख्वाइश।
- नो देरी इन शुभ काम।

इसी प्रकार इन्होंने अपने लेखन में अपनी भाषा से अमूर्त को मूर्त रूप प्रदान किया है। सुषमा जी अपनी कहानियों में बहुत ही सतर्क होकर भाषा का प्रयोग करती हैं। सुषमा जी ने अमूर्त स्थिति को ऐसे बिम्ब द्वारा प्रस्तुत किया है जो पाठक के पढ़ने से उसके मन में चित्र साकार होने लगता है। अमूर्त को मूर्त रूप में बनाते हुए कुछ उदाहरण–

- जिसकी दृष्टि में वह ज्योति सी समाई है अब उसकी दृष्टि में किरकिरी सी चुभेगी।
- मैं मर भी जाऊँ तो मुर्दों के इस मोहल्ले को खबर नहीं होगी।

सुषमा मुनीन्द्र जी ने रचनाओं में मुहावरों, कहावतों का भी बखूबी प्रयोग किया है। उनकी भाषा में कोई भी बनावटी पन नहीं है। आपकी कहानियों में पात्रों के अनुरूप मुहावरों, एवं कहावतों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। जैसे कि 'मृत्युगंध' में जासूसी करना, शांति छीनना, गंगा नहाना, चाँद में दाग होना, मिट्टी से सोना बनाना, बाजी पलटना इत्यादि मुहावरों का प्रयोग किया गया है। इसी कड़ी में आगे 'मेरी बिटिया' में हाथ खड़े कर देना, राई का पहाड़ होना, जैसे को तैसा, जले पर नमक छिड़कना, घूरे के भी दिन फिरना, पलके भारी होना ऐसे मुहावरों को दर्शाया गया है।

'जसोदा एक्सप्रेस' में दिन खुमारी में निकलना, जांगर न चलना, जीना हराम हो जाना, आँखों का तारा होना, तमतमा जाना, गुलाम होना अलहदा होना।

अन्तिम प्रहर का स्वप्न' में मिजाजपुर्सी में लगे रहना, खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे, बौराया सा घूमना, इश्क ठण्डा पड़ना, तिरोहित हो जाना।

इस प्रकार लगभग सभी कहानियों, उपन्यास में मुहावरों का बहुत ही अच्छा एवं सटीक प्रयोग किया गया है। भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए जिस तरह मुहावरों का योगदान होता है उसी प्रकार कहावतों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहता है। इनकी कहानियों में उपन्यास में कहावतों को भी देखा जा सकता है।

- जान है तो जहान है।
- कुत्ते–बिल्ली की तरह लड़ना।
- भगवान ने पेट दिया है तो रोटी भी देगा।
- प्रत्येक पुरुष की सफलता के पीछे किसी नारी का हाथ होता है।

अपनी रचनाओं में सुषमा जी ने नये विचारधारा से उत्पन्न सूक्तियों का भी प्रयोग किया है।

'अपना ख्याल रखना' कहानी में सूक्तियाँ:–

- भ्रम एक दिन टूटते हैं।
- आजमाने से कुछ हासिल नहीं होता।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 5, June 2023

नुक्कड़ नाटक :–

- प्यास भी विचित्र चीज है। अच्छी प्यास तभी लगती है जब पेट भरा होता है। खाली पेट न प्यास लगती है न पानी में स्वाद आता है।
- आदत और संबंध में मनुष्य की आदतें जल्दी छूट जाती है और संबंध जल्दी बन जाते हैं।

'ऑनलाइन रोमांस':–

- कुछ छवियाँ ऐसी होती हैं, जो स्थायी प्रभाव छोड़ती हैं।
- सुरक्षा घेरे के दबाव बहुत अधिक होते हैं।

'जसोदा एक्सप्रेस':–

- संभावनाएँ खत्म हो जाए लेकिन एकाएक सक्षमता खत्म नहीं होती।
- क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को अपराध।

'मेरी बिटिया':–

- पहाड़ पर चढ़ो तो पाओगे पगडण्डियाँ अपने आप बनती जा रही हैं।
- बुरे दिन भूलने के लिए होते हैं वरना उनके स्मरण से वर्तमान भी बेमेल हो जाता है।

'मृत्युगंध':–

- पद और प्रभुता का लोगों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव है।
- कड़वेपन के बावजूद औषधि की आवश्यकता और महत्ता होती है।

'अन्तिम प्रहर का स्वप्न':–

- यकीन पूरी तरह कभी नहीं मरते।
- अपने कभी नहीं मरते, यकीन कभी खत्म नहीं होता।

'अस्तित्व':–

- भावना और व्यवहार में भिन्नता होती है।
- प्रत्येक लाभ पर लोभ बढ़ता है।

समग्र रूप से देखा जा सकता है कि सुषमा मुनीन्द्र की कहानियों एवं उपन्यास में शब्दों का भण्डार है। उन्होंने भाषा के अनुरूप तत्सम्, तद्भव, उर्दू, देशज आदि शब्दों का प्रयोग किया है। अगर उनके भाषा में संस्कृत के शब्द है तो दूसरी तरफ ग्रामीण और नगरीय शब्द भी हैं। इन्होंने विभिन्न प्रकार की शब्दावली का इस्तेमाल किया है। इनकी शब्दावली बहुत ही सहज, सरल एवं पाठक बड़ी ही रुचि से कहानी को पढ़कर आनन्द प्राप्त करते हैं। साथ में ही नये विशेषज्ञों को भी दृष्टि दी गई है। शब्दों की जादूगरी कहीं भी भावों के उमड़ते प्रवाह को रोकने का काम नहीं करते, बल्कि यथार्थता लाने में सहयोग प्रदान करते हैं। आपकी विशिष्टिता सच में सराहनीय है। वैसे तो भाषा चिरपरिवर्तन शील है। हर युग में भाषा बदलती है। साहित्यकार भी वातावरण और परिवेश को देखते हुए भाषा का चयन करता है। सुषमा जी की भाषा मध्यमवर्गीय शहरी तथा गाँव के लोगों से जुड़ी भाषा कही जा सकती है। इनकी कहानियों में पात्रों के अनुरूप भाषा के माध्यम से विचारों की पूर्ण रूप से अभिव्यक्ति देखी जा सकती हैं। इन्होंने बिम्बों का प्रयोग भी बड़ी खूबसूरती से किया है। वह जब भी किसी अनुभूति को अभिव्यक्त करती है तो सारी इन्द्रियाँ सचेत हो उठती हैं और मन में चित्र सा उभरने लगता है। किस तरह से सुषमा जी कहानियों एवं उपन्यास के माध्यम से छोटी–छोटी बातों को उनकी संवेदनाओं को पाठकों के सामने लाती हैं, निश्चय ही सराहना के योग्य हैं। अपने शब्दों, बिम्बों के प्रयोगों से सुषमा जी ने स्थितियों का वर्णन जीवंत रूप में किया है जो पढ़ने वालों के हृदय को छू जाती है। अलंकारों की बात करे तो आभूषणों को अलंकार कहा जाता है। काव्य की शोभा बढ़ाने के लिए अलंकार का प्रयोग किया जाता है। भाषा के उद्देश्य को अलंकार द्वारा चरम स्थिति तक पहुँचाया जाता है। सुषमा जी ने अपनी कहानियों में बहुत से नवीन उपमानों का प्रयोग किया है। उपमा अलंकार, उत्प्रेक्षा अलंकार, उदाहरण अलंकार, अनुप्रास अलंकार, अतिश्योक्ति अलंकार, सन्देह अलंकार, मानवीकरण अलंकार इत्यादि का बखूबी चित्रण किया है। इसी प्रकार सुषमा जी ने मुहावरे, कहावतों एवं उपन्यासों में भी विभिन्न तरह की भाषा का इस्तेमाल किया है। विभिन्न प्रकार की भाषाओं के प्रयोग से कहाँनियों में बहुत ही आत्मीयता सा लगता है। बघेली भाषा का भी सुंदर रूप देखा जा सकता है। आपकी कहानियों में अंग्रेजी भाषा कहीं भी बनावटीपन नहीं लगती। जिस सहजता से अंग्रेजी भाषा का प्रयोग हुआ है उससे पाठक बहुत ही सरलता से तादात्म्य स्थापित कर लेता है। वैसे आज के पाठकों की मानसिक प्रभाव के अनुकूल ही अंग्रेजी, भाषा का प्रयोग आपने किया है। आपकी कहानियों की भाषा आकर्षक तथा

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 5, June 2023

विषय एवं पात्रों के अनुरूप, अत्यंत सशक्त व सटीक है। सुषमा जी ने अपनी रचनाओं में अधूरे वाक्यों का भी इस्तेमाल किया है, क्योंकि कहा जाता है कि मौन वाणी से अधिक गहराई से चोट किया जाता है। इनकी कहानियों के पात्र जिस भी गाँव शहर या किसी भी वर्ग के हो तो उसी से संबंधित भाषा की झलक दिखाई देती है। सुषमा मुनीन्द्र जी ने जिस तरह से शब्द चयन किया है, वह उनके समृद्ध एवं विस्तृत ज्ञान को दर्शाता है। यही वजह है कि इनके पात्रों में उस स्थान की मिट्टी की खूशबू आती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सुषमा मनीन्द्र जी ने अपनी रचनाओं में भाषा का बहुत ही अच्छा वर्णन किया है।

साहित्यकार को मनुष्य के सफल उद्घाटन एवं अभिव्यक्ति के साहित्य की रचना करते समय शिल्प का सहारा लेना पड़ता है। हर लेखक अपनी शैली का खुद निर्माण करता है। विचारों तथा भावों को व्यक्त करने के लिए शैली एक महत्वपूर्ण अंग है। शैली के द्वारा हम किसी भी लेखक को पहचान सकते हैं। साहित्य में शिल्प और शैली का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक लेखक की अपनी विशिष्ट शैली होती है। सुषमा मुनीन्द्र जी की कहानियों एवं उपन्यास में विविध प्रकार की शैलियों को देखा जा सकता है। इन्होंने चित्रात्मक शैली, प्रवाहात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली व्यंग्यात्मक शैली, उद्धरण शैली, काव्यात्मक शैली विचारात्मक शैली, संवादात्मक शैली संस्मरणात्मक शैली, प्रश्नात्मक शैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली इत्यादि शैलियों का बखूबी वर्णन किया है।

प्रश्नात्मक शैलीः–

सुषमा जी ने पात्रों के जरिये एक–दूसरे के बारे में जानने और उसका समाधान करने के लिए प्रश्नात्मक शैली को अपनाया है। कहानी 'जोंक' में मधुबाला अपने पति रामजी से परेशान रहती है जिसकी वजह से मधुबाला प्रश्न करती है–

''पुरुष स्त्री को देह के दायरे में ही रखकर क्यों सोचते–विचारते हैं? क्या देह के अस्तित्व के अतिरिक्त स्त्री का कोई अस्तित्व नहीं? नर्से ऐसे ही बदनाम हैं तो लो छोड़ देती हूँ नौकरी। घर बैठकर खाऊँगी। खिला सकोगे?''

भावात्मक शैलीः– आपने अपनी कहानियों में भावात्मक शैली का भी बखूबी चित्रण किया है। कहानी 'तुम खुश रहो हमारा ओ.के. है' में चिरौंजी की दुःखद स्थिति का भावात्मक चित्रण है–

''चिरौंजी बिछावन पर ढुलक कर रो रही है। दुलारी विमूढ़ हो गई। अम्मा को अब तक हड़बड़ाहट में कुछ निर्मोही सा दिखा। हिलक कर रोते पहली बार देख रही है। दुलारी हमने ऐसी शांति इत्मिनान, भावुकता कहीं नहीं पायी जो सेठ जी के साथ पायी।''

विवरणात्मक शैलीः– इस शैली में कथाकार अपने पात्रों की विशेष कार्य आदि बातों का विवरण जाहिर करता है। कहानी 'किरकिरी' में लेखिका ने कीर्ति के पति जयेश की ज्यादा उम्र के बारे में विवरण देते हुए कहा है, ''बारह वर्ष का अंतर बहुत होता है, ऊपर से उनका रंग–रच उन्हें उम्र से कहीं अधिक अधेड़ बना रहा है। सामान्य कद, रंग, साँवले से भी गहरा, पेट कुछ निकला हुआ है।''

विचारात्मक शैलीः– अपनी लगभग सभी कहानियों में सुषमा जी ने इस शैली का सुन्दर प्रयोग किया है। सुषमा जी एक चिन्तन प्रधान रचनाकार है। कहानी 'गणित' में पत्नी सर्वमंगला के द्वारा चुनाव से अपना नाम वापस न लेने पर सत्यवान विचार करता है।

''तुम राजनीति के दाँव पेंच समझने का प्रयास करो। मंगला पाँच वर्ष राजनीति से दूर रहना मेरे कैरियर को क्षति पहुँचाएगा। बहुत से सदस्य नई पार्टी अध्यक्ष से निकटता बना लेंगे। यहाँ तो केकड़ावाद फल–फूल रहा है टाँग खींचने का चलन है इन पाँच वर्षों में कई दिग्गज मुझसे आगे निकल जायेंगे।''

वर्णनात्मक शैलीः– साहित्य के क्षेत्र में यह शैली बहुत ही प्राचीन मानी जाती है। इस शैली में कहानीकार स्थान, घटना, पात्रों का स्थान, चरित्र, वातावरण आदि का वर्णन करता है। सुषमा जी ने अपनी कहानियों में वर्णनात्मक शैली का बखूबी चित्रण किया है। कहानी 'पुतइया' में लेखिका ने शंकर के व्यक्तित्व का वर्णन किया है–

''शंकर का हुलिया कुछ इस तरह दर्ज होता है– गाढ़े रंग का कुर्ता पजामा, बरसाती जूते ऊपर की ओर खींचे गये खिचड़ी बाल, मुँह में दबा चुभलाया पान, स्याह चेहरा आगे को उभरी पीली चपल आँखें, तानाशाही नजर फुर्तीली चाल कड़क आवाज। हुलिये से वह घाघ जान पड़ता है जोकि नहीं है। आदमी क्रोधी और हड़बड़ाया हुआ जरूर है पर हुनर जानता है।''

व्यंग्यात्मक शैलीः– हमारे मन में जब किसी के प्रति घृणा का भाव आ जाता है और उसके ऊपर क्रोध आने लगता है तो क्रोध के वश में हम इस व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग करते हैं। साहित्यकार भी इस शैली से अछूता नहीं रह सकता। आधुनिक समाज में जो अन्याय, पाखण्ड, अनाचार, भ्रष्टाचार फैला हुआ है। इसी सामाजिक चेतना के उद्देश्य से सुषमा मुनीन्द्र ने भी अपनी कहानियों में व्यंग्य शैली का बखूबी चित्रण किया है। कहानी 'मेरी बिटिया' में आज के समय में चिकित्सा क्षेत्र में गर्भ की जाँच होने पर पुत्री होने पर गर्भ में मार दिये जाने पर बाबूजी व्यंग्य मारते हुए बोलते हैं–

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 5, June 2023

'अच्छा हुआ जो रिपोर्ट सही नहीं मिली वरना ये बेचारी गर्भ में ही मार दी जाती। आधुनिक युग तेरी दुहाई है। पहले लड़कियाँ जन्म के बाद मारी जाती थी, अब गर्भ में ही मार दी जाती हैं।'

संस्मरणात्मक शैली:– इस शैली के माध्यम से साहित्यकार अपनी कहानियों में पात्र द्वारा घटित हो चुकी घटनाओं को स्मरण करता है। सुषमा जी ने इस शैली का प्रयोग पात्रों के परिचय देने के लिए या फिर किसी विशेष का परिचय देने में किया है। कहानी 'एक और सुदामा' में दीनबंधु अपने दोस्त श्रीकांत के साथ बिताये दिनों को याद करता हुआ खो जाता है।

''दीनबंधु के अधरों पर महीन सी मुस्कुराहट उभर आई। जब अम्मा उन पर क्रुद्ध होती थी। तब कहती थीं, चला आबत हय माठा कस भाँमत..... श्रीकांत प्रखर बुद्धि का विद्यार्थी था जबकि दीनबंधु औसत। बौद्धिक असमानता, पर दोनों की आर्थिक स्थिति एक–सी। यह विपन्नता निकटता का आधार बनी थी।''

चित्रात्मक शैली:– चित्रात्मक शैली कथाकार की महत्वपूर्ण शैली है। जब किसी कथाकार की कहानी को पढ़ते समय पाठक के मन में चित्र उभरने लगते हैं तो यह कथाकार की सफलता का सूचक है। प्राकृतिक तथा अन्य दृश्यों को साकार करने के लिए सुषमा जी ने इस शैली का बखूबी प्रयोग किया है। कहानी 'महिमा मण्डित' में रचनाकार ने नवरात्र के शुभ अवसर पर हर घर की रौनक का चित्रण किया है।

''गाँव की रौनक देखते ही बनती है। नवरात्रि की धूम है। घर–घर कीर्तन–भजन, जागरण पूजन, हवन, आरती हो रही है। गाँव की कच्ची खण्डजा वाली सड़कों में गाड़ियों की आवाज ही लगी हुई है और गाड़ियों के पीछे गाँव के अधनंगे रूखे बाल वाले बच्चे पीपी करते हुए दौड़ रहे हैं।''

काव्यात्मक शैली:– सुषमा जी जिन प्रसंगों एवं घटनाओं से आहत हुईं उसी को आधार बनाकर कथा–सृजन का कार्य शुरू किया। कथा लिखने में वह इतनी मगन हो जाती हैं। इनकी भाषा में काव्यात्मक शैली आ जाती है। कहानी में 'अभिज्ञान' की शादी जब मनीषी से हो जाती है तो अभिज्ञान मनीषी और सुहानी के बीच फंस जाता है और खुद को असहज पाता हैं खुद ब खुद काव्य भाषा बन जाती है–

''सुहानी फिर नजर न आई।
मनीषी का इधर तटस्थ भाव''
समझ न आ रहा था वह क्या करे न घर में लगे मन न बाहर लगे दिल।

उद्धरण शैली:– रचनाकार अपनी रचना को सटीक तथा हृदयग्राही बनाने के लिए उद्धरण शैली का प्रयोग करता है। सुषमा जी ने भी आवश्यकतानुसार इस शैली का प्रयोग किया है। कहानी 'चक्षुदर्शी' में सूरदास का पद उद्धरण है

- 'जहाज का पंक्षी वापस जहाज पर आता है।'
  कहानी 'राखी' में तुलसीदास जी की प्रसिद्ध उक्ति रामचरितमानस से उदाहरण रूप में लिया है–
- 'सफल पदारथ है जग माही, करमहीन का पावत नाही।'
  कहानी 'एक अकेला इस शहर में' सुषमा जी ने महात्मा गाँधी द्वारा गायी हुई पंक्ति को दर्शाया है–
- 'वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीर परायी जाने रे।'

आत्मकथात्मक शैली:– सुषमा जी ने अपनी कहानियों में आत्मकथात्मक शैली का भी बखूबी प्रयोग किया है। कहानी 'ऑनलाइन रोमांस' में जब नायिका को दूसरी लड़की अपने प्रेमी द्वारा धोखे की बात बताती है–

'मैं इन्दौर में पढ़ती थी। संजोग मेरा क्लासमेट था। उसने मेरे इश्क का मजाक बनाया। रईस बाप का अकेला बेटा। मैं भी उसके नाम का इस्तेमाल करने लगी।''

पत्रात्मक शैली:– इस शैली के माध्यम से पात्र अपनी बातों तथा विचारों को पत्रों द्वारा व्यक्त करते हैं। सुषमा जी ने अपने उपन्यास एवं कहानियों में पात्र द्वारा मन की व्यथा को पत्रों द्वारा व्यक्त करने का प्रयास किया है। उपन्यास 'छोटी सी आशा' में हम देख सकते हैं कि जब कौस्तुभ नीरजा को छोड़कर शहर चला जाता है तो वह पत्र द्वारा नीरजा से अपने मन की बातें कहता है–

प्यारी नीरजा,

दोबारा मिलने से मैं पूरी तरह बदल गया हूँ। मुझे कुछ काम करने का भी मन नहीं करता। तुम्हारी यादों में खोया रहता हूँ .....नौकरी पाने के लिये बहुत ही मेहनत और धैर्य की जरूरत होगी। ठीक है। अपना ध्यान रखना। मैं पत्र लिखता रहूँगा।

तुम्हारा कौस्तुभ !

इसी प्रकार कहानी 'कैदी' में जब नायिका 'पूर्णा' '(कैदी) साजन' को पत्र लिखती है तो साजन (कैदी) पत्र लिखकर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करता है–

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 5, June 2023

''मैंने नहीं सोचा था आप एक कैदी के पत्र का उत्तर देंगी। यह आपका बड़प्पन है। जेल में हम कैदी एक–दूसरे को कहानियाँ पढ़कर सुनाते हैं..... उसे मारने का मेरा इरादा नहीं था। बस दुर्घटना हो गई।''

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सुषमा मुनीन्द्र जी ने अपने कथा–साहित्य में सम्पूर्ण स्थिति को स्पष्ट करने के लिए सभी प्रकार की शैलियों को सुंदर प्रयोग किया है। आपने अपने लेखन में भाषागत एवं शिल्पगत कौशल का अच्छा वर्णन किया है। सुषमा जी का भाषा पर सम्पूर्ण अधिकार है। आपने अपनी शैली को सहज सरल बनाने के लिए वातावरण एवं पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है। आपकी रचनाओं में हमें प्रौढ़ता का आभास होता है। आपने अंलकारों का भी बखूबी चित्रण किया है। आपकी कहानियों एवं उपन्यास की भाषा जन भाषा होने के कारण पाठकों को भाव–विभोर एवं अभिभूत कर देती है। साधारण लगने वाले विषय भी आपकी भाषा एवं शैली से विचारणीय लगते हैं। आपने छोटी–छोटी बातों से भी बहुत बड़ा उद्देश्य दिखाने का प्रयास किया है। आपके कथा–साहित्य की भाषा में ताजगी एवं नयापन है जो आपकी विशिष्टता को दर्शाता है।

संदर्भ स्रोत :–

1. तिवारी, डॉ. भोलानाथ, भाषा विज्ञान, सरोजनी नायडू मार्ग इलाहाबाद/2002, प्रकाशक किताब महल, 22–ए
2. जोशी, डॉ. हेमचन्द, मैक्समूलर–भाषा विज्ञान पर व्याख्यान, पृ. 18
3. कामता प्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण
4. अग्रवाल, डॉ. सरयू प्रसाद, भाषा विज्ञान और हिन्दी, पृ. 10
5. सक्सेना, डॉ. द्वरिका प्रसाद, सामान्य भाषा विज्ञान, पृ. 06
6. दास, डॉ. श्यामसुंदर, भाषा विज्ञान, पृ. 20
7. मुनीन्द्र, सुषमा, अपना ख्याल रखना, ग्रन्थकेतन, प्रथम संस्करण 2012, पृ. 175
8. मुनीन्द्र, सुषमा, जसोदा एक्सप्रेस, ज्योति पर्व प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2015, पृ. 51
9. मुनीन्द्र, सुषमा, छोटी सी आशा (नुक्कड़ नाटक), युगबोध प्रकाशन रायपुर, 2000, पृ. 15
10. मुनीन्द्र सुषमा, कहानी संग्रह मृत्युगंध (2012), ग्रंथलोक प्रकाशन,, पृ. 50
11. मुनीन्द्र, सुषमा, अपना ख्याल रखना, ग्रन्थकेतन, प्रथम संस्करण 2012, पृ. 68
12. मुनीन्द्र, सुषमा, प्रेम संबंधों की कहानियाँ, नमन प्रकाशन, संस्करण 2017, पृ. 186,190 और 193